आँसू पीकर जी रहा

वृक्ष कहें कुछ आपसे, हमें न कांटों व्यर्थ ।
वरना होगा एक दिन, सच में बड़ा अनर्थ ।।-1

कायनात छोटी लगे, ऐसा अपना प्यार ।
मुट्ठी भर आकाश है, दो डग है संसार ।।-2

जग संदेशा दे रही, कोयल की हर कूक ।
सबसे मिलिए प्रेम से, करिऐ नेक सुलूक ।।-3

आँसू पीकर जी रहा,इस युग का इंसान ।
बरसों से देखी नहीं, चहरे पर मुस्कान ।।-4

परम्परा घायल हुईं, खुशियाँ हुईं यतीम ।
ज़हनों में जबसे घुली, नफरत वाली नीम ।।-5

सुख बोला इंसान से, यह मेरा दस्तूर ।
झूठ कपट छल से सदा, रखना मुझको दूर ।।-6

कंगन की आवाज से, हृदय करें संतोष ।
आसपास रजनी रहें, रिदम करे ये घोष ।।-7

वृक्षों को हम मान लें, माता-पिता समान ।
इनके ही आशीष से, मिलता जीवन दान ।।-8

पूंछा पेड़ पहाड़ से, कायनात भी मौन ।
माँ के जैसा दूसरा, इस धरती पर कौन ।।-9

अपने दुख की बात को, देना नहीं ज़ुबान ।
सुनकर तेरे मित्र भी, बन जाएं अन्जान ।।-10

खेत बटे आँगन बटे,बटी पेड़ की छाँव ।
भाई भाई जब लड़े, रोया सारा गाँव ।।-11

जीवन की शब्दावली,कर इतनी आसान ।
जिसको तेरे बाद भी, पढ़ें सभी इंसान ।।-12

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

मबृंदावन राय सरल
माता- स्व. श्रीमती फूलबाई राय
पिता- स्व. बालचन्द राय
जन्मतिथि- 03 जून 1951
जन्म स्थान- खुरई, सागर (मध्य प्रदेश)
शिक्षा- साहित्य रत्न, आयुर्वेद रत्न, सिविल इंजीनियर ।
भाषा - हिंदी, बुंदेली, उर्दू ।
प्रकाशन- हिंदी व बुंदेली भाषा में 14 किताबें प्रकाशित ।
साझा संकलन- लगभग 225 संकलनों में रचनाएं सम्मलित ।
के अलावा देश-विदेश की तमाम पत्र-पत्रिकाओं में रचनाओं का अनवरत प्रकाशन ।
सम्मान- देश की अनेक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित ।
प्रसारण- आकाशवाणी केंद्रों के साथ-साथ दूरदर्शन, ई टी. वी.,
सहारा टी. वी. आदि से कविताओं का प्रसारण ।
निवास-
राय भवन
94 पोददार कालोनी , सागर
जिला- सागर (मध्यप्रदेश)
पिन-470001
मो०- 7869218525